

दीनदयाल का स्वप्न

जो सच था

शिष्य थॉमसन

“भो परिश्रान्ता भाराक्रान्ताश्च सर्व्वे, मम समीपमायात,
तेनाहं युष्मान् विश्रमयिष्यामि।”

(हे सब परिश्रम करनेवालो और बोझ से दबे हुए लोगो, मेरे पास आओ। मैं तुम्हें विश्राम दूंगा।)



मैं दीनदयाल एक रात, अजीब सा स्वप्न देखता हूँ। उसे मैं इस लघुकथा में लिखता हूँ।

रात को मैंने अपनी कुटिया का द्वार बंद किया। बिस्तर लगाकर सो गया, तो एक लंबा स्वप्न मेरी उमर की तरह... शायद मेरे जीवन की एक फिल्म स्वप्न में देखता हूँ कि रात को देहरादून से चलने वाली पैसंजर ट्रेन में मैं बैठा हुआ हूँ, जो दिल्ली जाने को तैयार है। मेरी उम्र 10-11 वर्ष की प्रतीत होती है।

ट्रेन चली और मुझे ऐसा लगा मानो मेरी आँखें बाहर से खुद मुझे मेरे बचपन को देख रही हैं। पाँव में चप्पल, कमजोर सा शरीर, हाफपेंट, कमीज और फटा से एक स्वेटर पहने मैं ट्रेन के एक आम डिब्बे में बैठा हूँ, लेकिन सीट पर नहीं, टायलेट के दरवाजे के पास नीचे बैठा हूँ। ठंड का महीना लगता था, क्योंकि दूसरे यात्री भारी गरम कपड़े पहने बैठे थे।

लोकन मेरे साथ कोई नज़र नहीं आ रहा था। मैं अकेला था, और कोशिश करने पर भी मुझे अपने घर का पता, ठिकाना घरवालों का हुलिया या अपने गाँव का नाम भी याद नहीं आ रहा था।

कुछ स्टेशन छूट चुके हैं, और तब कुछ यात्री मेरे डिब्बे में आते दिखाई देते हैं। मेरा पाँव किसी ने कुचला या किसी ने पाँव से ठोकर लगाई, ठीक नहीं दिखाई दिया, पर स्टेशन आते ही किसी ने दरवाज़ा खोलकर गालियों के साथ मुझे बाहर धकेल दिया।

स्वप्न जारी है....

और अगला दृश्य कि मैं प्लेटफार्म पर उठने की कोशिश कर रहा हूँ, घुटने छिल गये हैं, और ठंड हड्डियों तक पहुँचती हुई...

टिकट नहीं है, पर मैं कहाँ जा रहा हूँ, कुछ समझ नहीं आ रहा, अकेला आँसुओं को स्वेटर से पोंछते हुए, मैं प्लेटफार्म पर खड़ा हूँ। कहाँ से आया हूँ, किधर को जाता हूँ नहीं मालूम, लेकिन हाँ, हाथ में एक छोटा कपड़े का थैला है, जिसमें एक फटा चादर है, जिसे मैं टटोल रहा हूँ।

स्वप्न में....

सूना सा रेलवे स्टेशन, पहाड़ों से उतरती ठंडी हवा, स्टेशन में चाय की दुकान के स्टोव की थोड़ी सी गर्मी पा लेने की आशा में, मैं पास ही दीवार से सटकर बैठ गया।

मेरे पीछे कौन? और मेरे आगे क्या? समझ नहीं आ रहा स्वप्न में...

फटी चादर और दो सड़क के कुत्ते और कुछ तीर्थयात्रियों के नज़दीक मैं लेटा हुआ हूँ। नाश्ता करते हुये तीर्थयात्रियों के कोलाहल ने शायद स्टेशन पर सोते हुए मुझे जगा दिया। अब खड़ा हूँ, हाथ में चादर लिए हुए, भिखारी तो नहीं हूँ, न भीख मांग रहा हूँ,

एक वृद्धा की नज़र मेरे मासूम से, कमज़ोर शरीर और बिखरे बालों पर पड़ी, उसने बची हुई दो पूड़ियाँ और भाजी मेरी तरफ बढ़ा दी। मेरी थोड़ी हिचकिचाहट और फिर तेजी से नाश्ता साफ हो गया। लेकिन दिशाहीन सा मैं कौन.....

स्वप्न में....

अचानक एक रेलवे के सिपाही का हल्का डंडा मेरी पीठ पर पड़ा। जैसे कुत्ते की चीख पत्थर लगने पर निकलती है, वैसे ही मेरी एक कराह निकली, और मैं स्टेशन से बाहर की ओर भागा।

मेरे पीछे लोगों का वार्तालाप कुछ इस तरह का सुनाई दिया—“आजकल ये बच्चे, आवारा, लावारिस, ट्रेनों में स्टेशनों पर चोरी और बदमाशी कर रहे हैं” सभी ने हाँ में हाँ मिलाई।

तीर्थ यात्री अपना सामान बाँधने लगे, और स्टेशन के बाहर एक बड़े पीपल वृक्ष के नीचे मैं बैठा नज़र आया।

पर अभी भी समझ नहीं आ रहा, कौन हूँ, कहाँ से आया हूँ, और किधर जा रहा हूँ।

स्वप्न का दूसरा पटल...

मैं अपने आपको देख रहा हूँ, एक सड़क के किनारे, एक चाय की छोटी दुकान के अंदर, मेरी उम्र 12-13 वर्ष की लगती है? पाँव में चप्पल नहीं है, पतले हाथ, बिखरे बाल, और कड़ाके की ठंड, बाहर पत्थर के कोयले सुलग रहे हैं और अंदर भारी शरीर वाले चाय की दुकान के मालिक मूँछें संवारते हुए मुँह, में पान चबाते हुए ऊँची कुर्सी पर बैठे हैं। मैं यहाँ? देखता हूँ मैं ठंड में चाय के कप पानी में धो रहा हूँ। मेरे हाथ से एक कप फिसला, और पत्थर पर लगकर टूट गया। गालियों और साथ ठंडा पानी जो जग में था उसे मालिक ने मेरे ऊपर फेंक दिया। गीली कमीज और कड़ी ठंड अब मैं आधा गीला हो चुका था।

तभी एक बस का हॉर्न बजा, और बस सामने आकर खड़ी हुई। और मालिक ने हँसते-हँसते हाथ जोड़कर सबका स्वागत किया। बस में बैठे बच्चे जब अपने माता पिता के साथ नज़र आये तब मैं, अपने से पूछ बैठा कि आखिर मेरी ये हालत कहाँ, कब और कैसे हुई, लेकिन इस खोज से कोई सुराग नहीं मिला...

मेरा स्वप्न मुझे आगे ले जाता हुआ...

देखता हूँ कि अब मैं गंगा किनारे कहीं चला जा रहा हूँ। मेरे एक बाजू में कल-कल करती मनभावनी गंगा, और दूसरे बाजू में उठते पहाड़ और सुंदर बन बीच में कभी वानर परिवार मुझ कंगाल से कुछ अपेक्षा करते हुए।

गौर से मैंने अपने आप को देखा। कोई 20 वर्ष का दुबला पतला युवक हल्की दाढ़ी, लंबे बाल जो एक चोटी में बंधे हुए, पाँव में चप्पलें, शरीर पर ढीला भगवा वस्त्र। तब मैंने मन ही मन कहा ये मैं तो नहीं हो सकता? एक पुराना फटा कंबल काँधे पर और अपने आप से बुड़बुड़ाता मैं चला जा रहा हूँ। कभी अकेला, कभी साधुओं की भीड़ के पीछे, लेकिन किधर? किधर? पहाड़ी पर यात्रियों से मैं कुछ दूर क्यों बैठा हूँ?

मैंने अपने से सवाल किया, अब मैं तीर्थ यात्री बन चुका था। अचानक जैसे मेरे तीर्थयात्री ने मेरी स्वयं की आवाज़ सुन ली हो। उसने ऊपर आँखें उठाई, और दोनों हाथ दिखाये, सफेद दाग़ और ज़ख़म से भरपूर, मेरी एक चीख़ सी निकली, कोड़! कोड़ ये क्या... स्वप्न में मेरा शरीर मरोड़ सा गया।

स्वप्न जारी है... एक नया दृश्य

अब मैं देखता हूँ एक अधेड़ उम्र का व्यक्ति हूँ, और फिर एक ट्रेन के आम डिब्बे में यात्रा कर रहा हूँ। हल्की दाढ़ी, बिखरे बाल, खादी का कुर्ता, गमछा, पायजामा और कपड़े का बैग... दिल्ली जा रहा हूँ। कुर्ते की जेब से टिकट निकालकर बार-बार देखता हूँ। दिल्ली नई दिल्ली के लिये टिकट है, पर फिर भी यात्रियों के साथ सीट पर क्यों नहीं, फिर वहीं ट्रेन में टॉयलेट के बाहर नीचे बैठा हुआ, कपड़े के बैग के ऊपर एक पता... शिष्याश्रम। मेरे हाथ में एक किताब है, और बैग में कुछ साहित्य है। तभी एक स्टेशन आने को हुआ। भीड़ कुछ अधिक दिखाई दी, कोई क्रोध से चिल्लाया ये साधु रास्ते में क्यों बैठा है, और अगले क्षण किसी ने जैसे धक्का लगाया, और मैं प्लेटफार्म पर मुँह के बल गिरा हुआ नज़र आया। मेरे थैले की किताबें बिखर गई। साहित्य उड़ने लगा। छोटी किताबें, परचे और एक किताब जिसका शीर्षक “प्रभु यीशु का जीवन”। मेरे हाथों पर और सिर और घुटनों पर चोट आई थी, मुझे देखकर मैं रो पड़ा, सच में या स्वप्न में मालूम नहीं...

लेकिन फिर भी मैं चुप क्यों था, क्रोध या आक्रोश नहीं, न ही मुँह में अपशब्द। मैं मौन हूँ। अन्याय का शिकार हूँ पर शांत हूँ, प्लेटफार्म पर पड़ा हूँ।

यात्री इधर-उधर मेरे चारों तरफ़ घूम रहे थे।

तभी अचानक एक व्यक्ति भीड़ को हटाते हुए, मेरे पास आया। उसके चेहरे पर प्रेम, शांति और दया थी। उसके कपड़े सफेद और बाल उज्ज्वल थे और आँखों में आंसू। क्या ये मुझे पहचानता है। मुझे तो आज तक किसी ने नहीं पहचाना था?

मेरे लिए कोई क्यों रोए, समझ नहीं रहा हूँ। तब उसने अपने कपड़े की किनार से मेरे ज़ख़मों को बांधा, और मुझे अपना हाथ देकर ऊपर उठाया। लेकिन लगता है प्लेटफार्म पर खड़े लोगों ने, न उसे देखा न उसे सुना। उनके लिये वो अदृश्य था।

उसने हाथ से इशारा किया और कहा “तुम्हें शांति मिले”, शिष्य मेरे पीछे आओ। तुम थके हुए हो और बोझ से दबे हो, परिश्रम करते हो मेरे पास आओ मैं तुम्हें विश्राम दूँगा। मैं चुपचाप उठा और उसके पीछे हो लिया। उसकी आवाज़ संगीत की तरह मेरे कानों से दिल तक उतर गई। गंगा के किनारे-किनारे मैं पहाड़ी की तरफ़ जा रहा था। संकरा मार्ग या, कठिन राह थी, पर दिल की शांति और आनंद से मैं उसके वचनों को सुनता चला जा रहा था। उसने कहा....

धन्य हैं वे जो मन के दीन हैं, क्योंकि स्वर्ग का राज्य उन्हीं का है।

धन्य हैं वे जो शोक करते हैं, क्योंकि वे शांति पायेंगे।

धन्य हैं वे जो नम्र हैं क्योंकि वे पृथ्वी के अधिकारी होंगे।

धन्य हैं वे जो धर्म के भूखे और प्यारे हैं, क्योंकि वे तृप्त किए जायेंगे।

धन्य हैं वे जो दयावंत हैं, क्योंकि उन पर दया की जाएगी।

धन्य हैं वे जिनके मन शुद्ध हैं क्योंकि वे परमेश्वर को देखेंगे।

धन्य हैं वे जो मेल करानेवाले हैं, क्योंकि वे परमेश्वर के पुत्र कहलायेंगे।

धन्य हैं वे जो धर्म के कारण सताये जाते हैं, क्योंकि स्वर्ग का राज्य उन्हीं का है। और फिर मेरी ओर मुड़कर उसने कहा—

जीवन की रोटी में हूँ, जो मेरे पास आता है, वह कभी भूखा न होगा और जो मुझ पर विश्वास करता है वह कभी प्यासा न होगा।

जगत की ज्योति मैं हूँ, जो मेरे पीछे हो लेगा, वह अंधकार में न चलेगा, परंतु जीवन की ज्योति पाएगा,

मोक्ष द्वार मैं हूँ, यदि कोई मेरे द्वारा भीतर प्रवेश करे, तो मुक्ति पाएगा, मैं इसलिये आया हूँ कि भरपूर जीवन दान करूँ। भेड़ समान मनुष्यों का पालनहार चरवाहा मैं हूँ।

पुनरुत्थान और जीवन में ही हूँ जो कोई मुझ पर विश्वास करता है यदि वह मर भी जाये, तौभी जीयेगा, और जो कोई जीवित है, और मुझ पर विश्वास करता है। वह अनन्त काल तक नहीं मरेगा।

मार्ग, सत्य और जीवन में ही हूँ, बिना मेरे द्वारा कोई परमेश्वर पिता के पास नहीं पहुँच सकता।

तुम मुझ में बने रहो, और मैं तुम में, जैसे डाली यदि वृक्ष में बनी न रहे, तो अपने आप से नहीं फल सकती, वैसे ही तुम भी यदि मुझ में बने न रहो तो फल नहीं ला सकते, मैं वृक्ष हूँ तुम डालियाँ हो,

मुझसे अलग होकर तुम कुछ भी नहीं कर सकते, मेरी आज्ञा यह है, कि जैसा मैंने तुम से प्रेम रखा वैसा ही तुम भी एक दूसरे से प्रेम रखो,

अब आवाज कुछ धीमी होती गई, सूरज ढलने को हो रहा था और मैं एक पहाड़ के शिखर पर पहुँच गया था।

ऊँचाई पर धुंधले में एक लकड़ी के क्रूस पर कोई लटका नज़र आया। दिखने में स्वरूप प्रभु यीशु जैसा था। मैंने साष्टांग प्रणाम किया और कहा हे प्रभु आप प्राण मेरे लिये दे रहे हैं? मुझे पापमोचन दो, क्षमा करो और अपना जीवन दान करो...

प्रभु यीशु ने कहा “मैं इसलिये आया हूँ, कि तुम्हारे पापों के बदले स्वयं दंड उठाऊँ, मुझ पर विश्वास करने वालों के पाप में क्षमा करता हूँ जाओ शिष्या।” मेरी क्षमा और मुक्ति पाकर नया जीवन पाओ। स्वर्ग धाम में तुम्हारा स्वागत है।

अचानक मेरी कुटिया का द्वार किसी ने ज़ोर से खटखटाया, और मैं नींद से जाग उठा। मैंने द्वार खोला पर बाहर, दूर तक कोई दिखाई न दिया।

मैंने अपने आप से कहा “यह स्वप्न था पर सच था।”

इस कथा का चरित्र, दीनदयाल है, जो एक स्वप्न में स्वयं अपनी जीवनी देख रहा है। इसी तरह हमारी निराशा में हम भी आशा की किरण यीशु वचन में पायेंगे। (बाइबिल में मत्ती 5 और यूहन्ना की किताब)

Please visit: for new messages and Bhakti songs
www.shishyashram.com

SHISHYASHRAM

[Registered under Indian Trust Act, 1882 Reg. No-2401
305 D/A Sheeshmahal, Shalimar Bagh, New Delhi-110 088
e-mail: [jawanjawan@yahoo.com](mailto:jawabjawan@yahoo.com)